Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 5, October-2022, ISSN 2230-7540

मुंबई की सार्वजनिक इमारतों के भित्तिशिल्प: एक सांस्कृतिक निवेश

विजय गोपाल सकपाल[1*], डॉ मनोज टेलर[2]

शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, (राज.)

असोसिएट प्रोफेसर, व्हीजुव्ल आर्ट विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, (राज.)

सार - इस शोध पत्र का उद्देश्य मुंबई शहर में स्थित सार्वजनिक इमारतों के भित्तिशिल्प के संबंध में एक गहन अध्ययन प्रस्तुत करना है। इस शोध के माध्यम से, हम सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और वास्तुकला के प्रतिष्ठित मूल्यों को समझने और इमारती भित्तिशिल्प के माध्यम से उन्हें समाज में स्थापित करने के लिए एक अवसर प्रदान करने का प्रयास करेंगे। यह शोधपत्र मुंबई की इमारतों के भित्तिशिल्प की एक विस्तृत छानबीन करेगा, जिसमें सम्प्रेषण का निर्माण, नवीनीकरण के प्रक्रिया, और स्थानीय भूमिका के प्रभावों का अध्ययन किया जाएगा। इसके अलावा, यह शोधपत्र उन संकेतों को उजागर करेगा जो संगठनात्मक, सामाजिक, और आर्थिक परिवर्तनों को दर्शाते हैं, जिनके बाद मुंबई की सार्वजनिक इमारतों की निर्माण और संरक्षण व्यवस्थाएं पर प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द : मुंबई, सार्वजनिक इमारतें, भित्तिशिल्प, सांस्कृतिक निवेश, संरचना, विश्लेषण, ऐतिहासिक, कला, मानचित्र, विकास, समाजशास्त्र, साहित्यिकता

----------X----------

मनुष्य के विकास को मापने के पैमाने का कोई निश्चित स्वरूप नहीं है, लेकिन उसके सांसारिक जीवन की सुख-सुविधाओं के साथनैतिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील विचार उसके सच्चे विकास का संकेत हो सकता है। रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की बुनियादीजरूरतें हैं।

भले ही हम मानव विकास के प्रारंभिक अर्थ की व्याख्या उन्हें समृद्ध करने के रूप में करें, यह इतना सीमित नहीं है। संस्कृति में धर्म, भाषा, कला आदि पर विचार करना होगा, शहरी विकास, स्वाद, अभिरुची आदी संस्कृती महत्वपूर्ण पहलू हैं।

अंग्रेजों के आने के बाद मुंबई का विकास हुआ। इससे पहले, मुंबई को सात द्वीपों में विभाजित थी। मुंबई की आर्द्र जलवायु खेती, कपास व्यापार के लिए अच्छी थी और मुंबई गहरे समुद्र में मालधुलाई (शिपिंग) के लिए महत्वपूर्ण हो गई थी। उन समय कई इमारतों का निर्माण यूरोपीय गॉथिक शैली में किया गया है। ये इमारतें मुंबई की पहचान होने के साथ-साथ आकर्षण का केंद्र भी है । विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन, नगर निगम भवन, जनरल पोस्ट ऑफिस (जिपीओ) आदि इमारतें उत्कृष्ट वास्तुकला के उदाहरण हैं और ऐसे बृहन्मुंबई में कई इमारतें हैं, वास्तुकला के साथ साथ वे उनपर कि हुई सजावट निश्चित रूप से विशेष है ।

जे जे स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना 1857 में सर जमशेटजी जीजिभॉय और जगन्नाथ शंकरशेट के प्रयासों से हुई थी, शुरुआती दिनों में संस्था का मुख्य उद्देश्य भारतीय कारीगरों के बच्चों को कारागिरी का शास्त्रीय शिक्षा प्रदान करना था। बादमे जल्दीही जे जे स्कूल में कारागिरी के जगह कला पढना सुरू किया और बॉम्बे स्कूल ओफ़ आर्ट एंड इंडस्ट्री के बजाए जे जे स्कूल ओफ़ आर्ट के नाम से जाना जाने लगा । मशीनी युग में मनुष्य की जरूरतें बदलीं और सारे शैक्षणिक संस्थान बदल गए, इस संस्था शुरुआती समय के ब्रिटिश प्रोफेसर लॉकवुड किपलिंग का मुंबई शहर के विकास में बहुत बड़ा योगदान

है। उस समय मुंबई में बनने वाले कई भवन की साज-सज्जा तथा नक़्शे जैसे कार्य उनकी देखरेख में किये गए है। कॉफर्ड मार्केट उन में से एक भवन है। इस भवन का मुख्य उद्देश्य बाजार था। इसके प्रवेश द्वार पर लॉकवुड किपलिंग की भित्तिशिल्प (MURIL) उत्कृष्ट कलाकृति है। यह इमारत आधुनिक यूरोपीय वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। दो भित्तीशिल्प (भित्ति चित्र) मूर्तिकला की भी उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। इसमें उस समय के किसानों और सब्जी मंडियों को दर्शाया गया है।इसे समकालीन वस्तवदर्शी कला के रूप में भी देखा जा सकता है।

इसी तरह, देना बैंक भवन के लिए नारायण गणेश पानसरे की पत्थर की दीवार की भित्तिचित्र (MURIL) भी महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ हैं। इस भित्तिशिल्प की मुख्य विशेषता यह है कि, पत्थर के समतल पर उकेरा हुवा रेखाचित्रों का अद्भुत आविष्कार है, जो एक दृष्टि सेआधुनिक मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमुना है । उत्कीर्णन मूर्तिकला में सतह को रेखांकित करते समय, समतल का ख़याल रखते हुए और काम को ऊपर उठाते (उभार) हुए कलाकाराने अपने अविष्कार को असामान्य रूप प्रदान किया है ।

इस शोध पत्र में मुख्य रूप से इन चार भित्तिशिल्प (MURIAL) पर विचार करेंगे । क्रोफोर्ड मार्केट कि इमारत के मुख्य प्रवेश द्वार के ऊपर दो भित्तिचित्र स्थापित हैं, जो प्रसिद्ध मूर्तिकार एवं तत्कालीन जे जे स्कूल आर्ट्स हेड लॉकवुड किपलिंग द्वारा बनाये हैं। इन चित्रों में व्यापारी, किसान को जल सेवा करने वाले सेवक और इनकी परोपकारी मनीषा को (पाणि देने के दृश्य को) दर्शाया गया है। 19 वीं सदीके मुंबई के बाजारों के चित्र में कुम्हारों, बुनकर, लुहारों, सब्जियों, फलों और मांस विक्रेताओं आदि को संगमरमर के पत्थरों में उकेरा है। यह भित्तिचित्र उच्च उठाव पद्धति (HIGH RELIF MOTHOD) का सुंदर अविष्कार हैं। इसे दरवाजे पर अर्धवृत्ताकार आकार में लगायागया है और एंथ्रोपोमोर्फिक डिजाइन बेहद खूबसूरत है। सांस्कृतिक रूप से भी इस मूर्तिकला के महत्व को समझाया जा सकता है, क्योंकि यह तत्कालीन समाज, बाजार की यथार्थवादी तस्वीर है। डिज़ाइनर ने ग़रीबों, किसानों और धनी व्यापारियों या उन लोगों के बीच के अंतर को खूबसूरती से प्रस्तुत किया है, जो अपने कपड़ों के माध्यम से बाज़ार में खरीदारी करते हैं। उनका पहनावा अलंकरण उस समय की संस्कृति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

दोनों चित्रों में सब्जी, फल, बैलगाड़ी, बच्चे, गुजराती और मराठी शैली की साड़ी पहने महिलाएं, पानी का घड़ा, कुएं से पानी निकालना, वृक्षारोपण आदि का चित्रण किया गया है।

भारतीय लघुचित्रकला की एक विशेषता यह है कि विभिन्न विषयों को एक ही ढाँचे में रचना की जाती है। पारंपरिक भारतीय कलाअक्सर सूचनात्मक मूल्यों और सौंदर्य गुणों से भरपूर होती है, जो किसी विषय के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करती है।इन भित्तीशिल्पों में (mural) भारतीय लघुचित्र तत्वों को आधार माना गया है ।

न्यू इंडिया एंशोरनस बिल्डिंग के ईमारत वास्तुकला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं । मुंबई की सार्वजनिक मूर्तियों में भी उनका महत्वपूर्ण स्थान है। इस शानदार दीवार मूर्तिकला (भित्तिशिल्प) का मुख्यविषय एक कारखाने के कर्मचारी और एक किसान महिला हैं। महिला के कंधे पर लगी गेहूं की फसल को खूबसूरत अंतिम संस्कार दिया गया है। मराठवाड़ी साड़ी में एक महिला शरीर एक श्रमसाध्य मुद्रा प्रदर्शित करता है, हालांकि दोनों तरफ छोटे संस्करण फसल से लेकर अनाज पर्यटन प्रक्रिया तक हैं, लेकिन इस दृश्य में भारतीय ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था का स्पर्श है। उस समय मशीन युग और आधुनिकता का महत्व मुंबई और शहरी क्षेत्रों में समझा जाता है ।

ये मूर्तियां न केवल यतार्थवाद के दर्शन का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि मानवीय मूल्यों और करुणा की भी वकालत करती हैं, इस लिए ये भित्तिशिल्प न केवल क्रॉफर्ड मार्केट और बैंक ऑफ़ इण्डिया की इमारत को सजाते हैं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों को भी स्थापित करते हैं।

21 वीं सदी में मुंबई का परिदृश्य काफी बदल गया है। इसके लिए पूरी तरह से पश्चिम की आधुनिकता और अनुकरण जिम्मेदार है। यह स्पष्ट रूप से देखा जाता है कि बैंक ऑफ इंडिया की इमारत पर किसानों और आधुनिक श्रमिकों के भित्तिशिल्प उकेरे गए हैं। इनभित्ति चित्रों से पता चलता है कि आज के आधुनिक परिवेश में

www.ignited.in

परंपरा की सुंदरता अनोखी है, नारायण गणेश पानसरे ने जेजे स्कूल में कला का अध्ययन किया, उनका जन्म उरण में हुआ था और कोंकण मुंबई की संस्कृति से उनका सूक्ष्म परिचय था।

इसलिए यंत्र युग में कृषि फल उद्योग के महत्व को दूसरी दीवार की मूर्तिकला में दर्शाया गया है। उनके साथ दो छोटी मानव आकृतियाँ और कारीगरों के हाथों में व्हील / यंत्र युग को पुरस्कृत करने के लिए हैं। यह कलाकारी उत्तम है।

क्रॉफर्ड मार्केट और बैंक ऑफ इंडिया पर लगे ये दो भिति चित्र सिर्फ सजावट नहीं हैं, बल्कि ये मूर्तियां उस समय की संस्कृति का संग्रह हैं और कलात्मक गुणों से भरपूर हैं।

(क्रॉफोर्ड मार्किट की मुख प्रवेश द्वार पर अंकित भितिशिल्प)

(क्रॉफोर्ड मार्किट की मुख प्रवेश द्वार पर अंकित भितिशिल्प)

(बैंक ऑफ़ इंडिया की ईमारत पर उकेरी हुई पानसरे के भितिशिल्प)

संदर्भ:

1) कैप्टन सोलोमन, म्यूरल पेंटिंग ऑफ़ द बॉम्बे स्कूल, द टाइमस ऑफ इंडिया प्रेस, मुंबाई 1930

२) शिल्पकार चरित्रकोश, संपा. सुहास बहुळकर, दिपक घारे , साप्ताहीक विवेक (हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था) मुंबई: 2013

3) मुधुमंगेश कर्णाक (संपादन)सांस्कृतिक महाराष्ट्र (1960 ते 2010) महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि सांस्कृतिक मंडळ, मुंबई 2011

4) विनोद भारद्वाज (संपा) कलाए आस पास, ललित कला अकादमी नई दिल्ली, 2005

5) सिग्मन फाईड (अनुवाद प्र.ना.परांतपे) लि ओनार्दो विं ची महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, मुंबई 1980

6) दिपक घारे (संपादक) कला मंदीरातील चाळीस वर्षे मॅजेस्टिक पब्लीकेशन हाऊस गिरगाव मुंबई प्रथम आवृत्ती 1940 द्विलोभ आवृत्ती 2018

7) सुहास बहूळकर प्रफुल्ला डहानुकर मास्टर स्ट्रोक जहांगीर आर्ट गॅलरी, मुंबई 2010

8) सर जे जे स्कूल ऑफ आर्ट, केतकर, कला संचालनालय, मुंबई

Corresponding Author

विजय गोपाल सकपाल*

शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, (राज.)